सच्चा हीरो मेंढक

मैक्स

सच्चा हीरो मेंढक

मैक्स

आसमान में काले बादल छा गए थे.

सूरज बादलों के पीछे गायब हो गया था.

"अब बारिश शुरू हो रही है," मेंढक ने खुशी से सोचा.
पहली बूँदें उसके नंगे बदन पर गिरीं.
मेंढक को बारिश बहुत पसंद थी.

मेंढक ने खुशी से नाचना शुरू किया
क्योंकि बारिश की बूंदें मोटी थीं और तेज़ी से बरस रही थीं.
"बारिश हो रही है, बारिश हो रही है. मेरा नेकर गीला हो गया है!"
मेंढक जोर से चिल्लाया.

आसमान काला और गहरा हो गया.

फिर बहुत तेज़ी से बारिश होने लगी.

वो बारिश मेंढक के लिए भी बहुत ज़्यादा थी.

वह गीला टपकता हुआ अपने घर की तरफ दौड़ा.
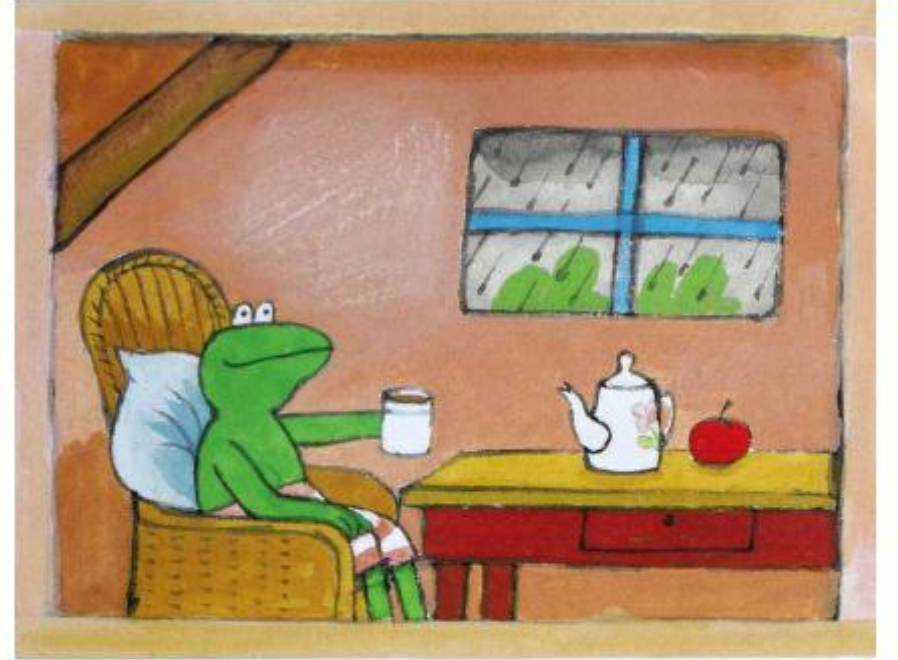
मेंढक ने खुद के लिए गर्म चाय बनाई.

बारिश की बूंदे लगातार खिड़की से टकराती रहीं.

तीन दिनों तक लगातार बारिश के बाद, मेंढक बेचैन होने लगा.

वो अपने दोस्तों - बतख, सुअर और खरगोश के बारे में सोचने लगा.

बारिश शुरू होने के बाद से उसने उन्हें नहीं देखा था.

पांचवें दिन, नदी उफनना शुरू हुई.

उससे मेंढक के घर में पानी भर गया.

पहले तो मेंढक को यह मजाकिया लगा,

लेकिन फिर उसे चिंता होने लगी.

वह जल्दबाजी में बतख के घर दौड़ा हुआ गया.

वहां भी बाढ़ आ गई थी.

"यह सब पानी कहां से आ रहा है?" बतख ने सख्त आवाज़ में पूछा.

मेंढक चिल्लाया, "नदी के तटबंध टूट गए हैं."

"चलो हम दोनों सुअर के घर जाते हैं."

फिर वे दोनों पानी में चलते-चलते सुअर के घर पहुंचे.

सुअर दूसरी मंज़िल की खिड़की के बाहर झाँक रहा था.
"मेरी सभी चीजें पानी में भीग गईं हैं," उसने रोते हुए कहा

यह एकदम सच था.

कमरे के चारों ओर टेबल और कुर्सियां पानी में तैर रही थीं.

सब कुछ गड़बड़ था.

वे वहां नहीं रह सकते थे.

"चलो चलें और खरगोश को देखें," मेंढक का सुझाव दिया.
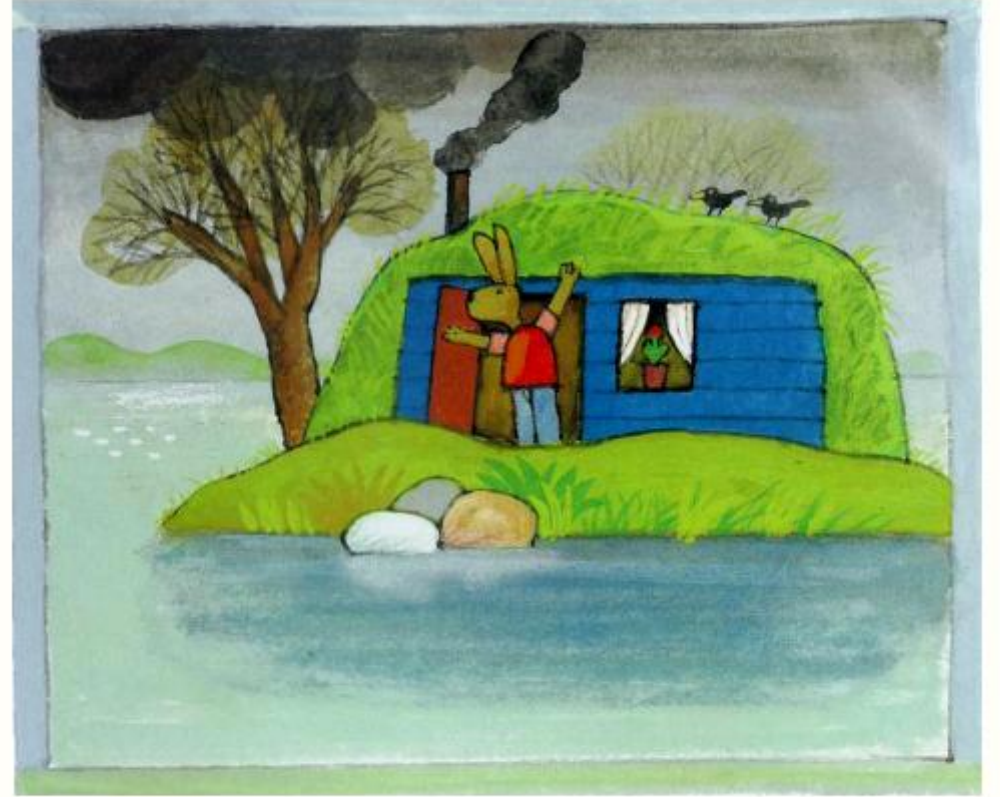
खरगोश का घर पानी के बीच एक टापू पर था.

खरगोश दरवाजे पर ही खड़ा था.

उसने अपने दोस्तों को देखकर हाथ हिलाया.

"अंदर आओ," वो चिल्लाया. "यहाँ एकदम सूखा है."
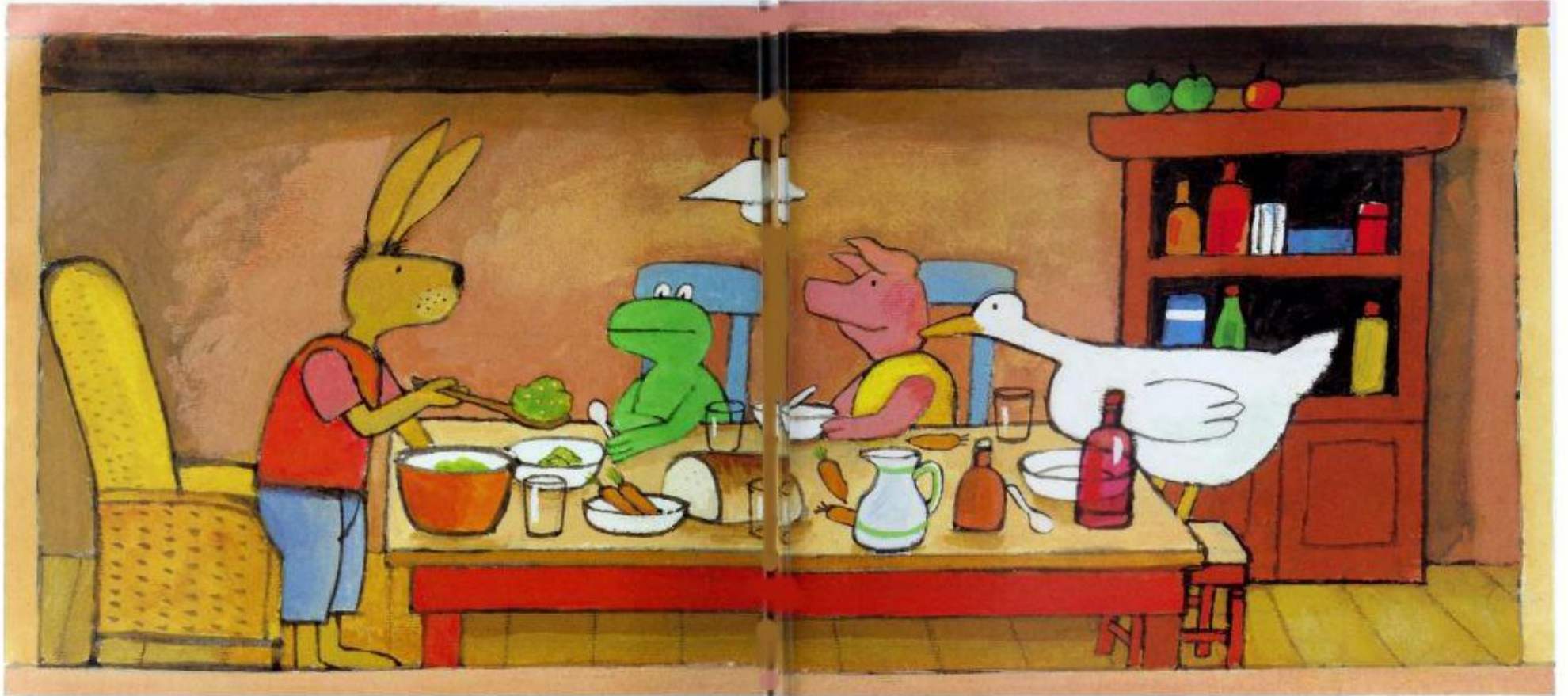
अंदर गर्म था. खरगोश को धन्यवाद देते हुए
तीनों मित्रों ने खुद को चूल्हे के सामने सुखाया.
उन्होंने खरगोश को अपने घरों की बाढ़ के बारे में बताया.
"आप सभी मेरे साथ यहीं रहें," खरगोश ने कहा. "मेरे यहाँ
काफी जगह है और भोजन की भी कुछ कमी नहीं है."

उसके बाद खरगोश ने बड़े पतीले में शोरबा बनाया और सभी दोस्तों ने
उसे पेट भरकर पिया. वे बहुत भूखे थे और उन्होंने खूब खाया.
उन्होंने साथ-साथ एक आरामदायक शाम बिताई.
बारिश अभी भी खिड़की के कांच पर लगातार दस्तक कर रही थी.

मेहमान कुछ दिनों तक खरगोश के घर में ही रहे.
वे साथ-साथ बहुत खुश थे.
बाहर लगातार बारिश हो रही थी.

फिर एक दिन उन्होंने पाया कि घर में धीरे-धीरे खाना
ख़त्म हो गया था और आखिरी डबलरोटी बची थी.
"हमारे पास अब भोजन नहीं बचा है," खरगोश ने
गंभीर और चिंतित होकर कहा.
"अगर हमें तुरंत मदद नहीं मिली तो हम मर जाएंगे," बतख ने कहा.
"मैं मरना नहीं चाहता," मेंढक ने कहा, "कभी भी नहीं."

अगले दिन केवल डबलरोटी के आखिरी टुकड़े ही बचे थे. वे सभी बहुत भूखे थे. लेकिन वे जानते थे कि उन्हें क्या करना है. बाहर, बारिश बंद हो गई थी लेकिन पानी अभी भी बहुत अधिक था.
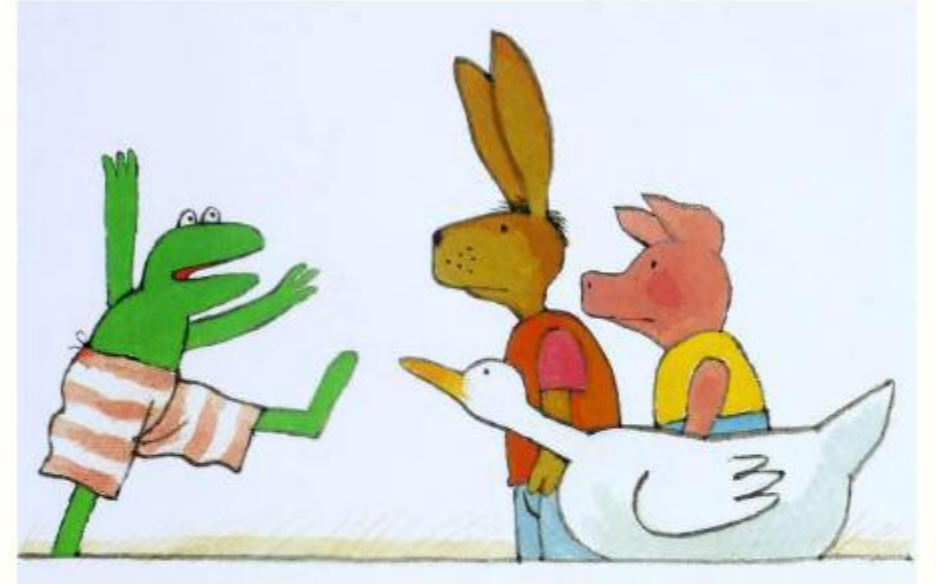
"मुझे पता है!" अचानक मेंढक चिल्लाया.
"मैं उन पहाड़ियों पर तैर कर जाऊंगा और वहां से मदद लाऊंगा."
खरगोश चिंतित दिखा. "नदी की धार बहुत तेज़ है और यह रास्ता भी बहुत लम्बा है," उसने कहा. "तुम्हारी यात्रा काफ़ी ख़तरनाक होगी."
"लेकिन मैं नदी पार कर पाऊंगा," मेंढक ने बड़े उत्साह से कहा.
"हम सब में मैं सबसे अच्छा तैराक हूँ." इस सच को सब जानते थे.

उसके बाद मेंढक ने बहादुरी से पानी में कदम रखा.
उसके दोस्त घबराहट से उसे देखते रहे.
जल्द ही वो उनकी आँखों से ओझल हो गया.

पानी बर्फ से भी ठंडा था, लेकिन मेंढक ने इस बारे में बिल्कुल नहीं सोचा. वो सिर्फ बतख, खरगोश, सुअर की भूख के बारे में सोच रहा था.

जब मेंढक तैरकर कुछ आगे गया तो वहां
पानी की धार और तेज़ हो गई. मेंढक थक गया.
उसके लिए आगे बढ़ पाना बहुत मुश्किल हो गया.
अचानक पानी की धार उसे दूर बहा कर ले गई.
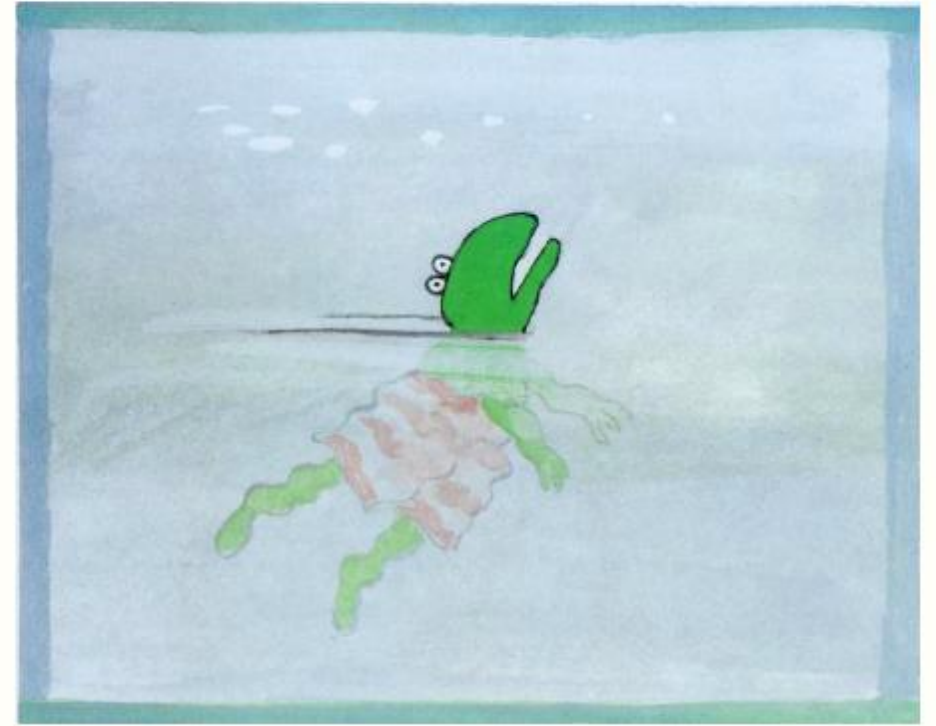
मेंढक डूबने लगा.
"मैं एक ऐसा मेंढक हूँ जो अब तैर नहीं सकता," मेंढक ने सोचा.
"मैं डूब जाऊंगा! मैं मरने जा रहा हूं! मैं अब अपने दोस्तों से
फिर कभी नहीं मिल पाऊंगा."

फिर उसे एक परिचित आवाज़ सुनाई दी, "नमस्ते! अरे यह कौन है?" फिर दो मजबूत हाथों ने मेंढक को पानी से बाहर निकालकर एक नाव में रखा. वो मेंढक का दोस्त चूहा था. मेंढक ने चूहे को बारिश, बाढ़ और भूख के बारे में बताया, और कैसे वो मदद खोजने निकला था.

"तुम बिलकुल फ़िक्र मत करो," चूहे ने कहा. "मेरी नाव खाने के सामान से भरी हुई है. उस सामान को मैंने अपनी यात्रा के लिए इकट्ठा किया था. मेरे पास सबके खाने के लिए पर्याप्त भोजन है."

फिर चूहे ने नाव को खरगोश के घर की ओर मोड़ा, जहां तीन दोस्त बेसब्री से मदद का इंतजार कर रहे थे.

जब उन्होंने मेंढक को एक नाव में आते देखा तो
सुअर, बतख और खरगोश बेहद खुश हुए.
लेकिन खरगोश के साथ वो दूसरा कौन था?

बेशक, वो उनका अच्छा दोस्त चूहा था.
उन्हें अपनी आंखों पर यकीन नहीं हुआ.

चूहे की नाव में खाने का अच्छा स्टॉक था - रोटी, शहद, जैम, मक्खन, सब्जियाँ, आलू और उनके आलावा और बहुत कुछ.

"चूहे, तुमने हमें बचा लिया," खरगोश ने कहा.
"नहीं, यह सच नहीं है," चूहे ने कहा, "उसके लिए आपको मेंढक को धन्यवाद देना चाहिए. वो मेंढक, भयंकर बाढ़ में अपने जीवन को खतरे में डालकर मेरे पास तैरता हुआ पहुंचा."
फिर सभी मित्र, मेंढक को देखते रहे. मेंढक का चेहरा गर्व से चमकने लगा. बात एकदम सच नहीं थी, लेकिन फिर भी ...

उसके बाद से हालात बेहतर हुए.

दोस्तों ने अपने बचाव का जश्न मनाया,

मेंढक उसका नायक था.

सूरज फिर से चमकने लगा

और पानी का स्तर धीरे-धीरे कम होने लगा.

एक-दो दिन के बाद पानी बह गया.

अब मेंढक, बतख और सुअर अपने-अपने घरों में लौट सकते थे.

लेकिन उनके घर गंदगी और कीचड़ से भरे थे.

"कोई बात नहीं," चूहे ने कहा और वो उनकी मदद करने आया.

उसने साफ़-सफाई की और फिर चीज़ें पहले जैसे ही हो साफ़ गयीं.

लेकिन अबचीजें एकदम पहले जैसी नहीं थीं.

उनमें से कोई भी उस भयानक बाढ़ को कभी नहीं भूला.

समाप्त

तेज़ बारिश में नदी का तट टूट जाता है और फिर मेंढक और उसके दोस्त बाढ़ में फंस जाते हैं. फिर मेंढक - जो सच में एक हीरो है अपने दोस्तों की मदद करने के लिए अपनी जान जोखिम में डालता है.

मैक्स एक पुरस्कृत कलाकार है, जिनकी किताबें कोमल हास्य के साथ महत्वपूर्ण विषयों को छूती हैं.